भारतीय शैक्षिक चिन्तक

श्री अरविंद घोष

जीवन परिचय :- श्री अरविन्द घोष का जन्म 1872 ई० में कलकत्ता नगर के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा दार्जिलिंग में प्राप्त करने के उपरांत इन्हें सात वर्ष की अल्प आयु में ही शिक्षाध्ययन के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। उन्होंने वहाँ चौदह वर्ष तक विद्याध्ययन किया। वहाँ रहते हुए श्री अरविन्द घोष ने ग्रीक, लैटिन, फ्रैंच, जर्मन तथा इटालियन भाषाओं का अध्ययन किया। 18 वर्ष की आयु में ही श्री अरविन्द ने सन 1890 में भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा उत्तीर्ण की और सन 1893 ई० में अरविंद घोष भारत वापस चले आये और सन 1906 तक बड़ौदा नरेश की सेवा में 13 वर्ष तक रहे और वहाँ पर उन्होंने संस्कृत तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

जब श्री अरविंद घोष इंग्लैण्ड भेजे गये थे तब इनके पिता डा० कृष्णधन घोष ने उन्हें आदेश दिया वो भारतीय आचार-विचार को छोड़कर अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति को ग्रहण करें। उनकी आकांक्षा को ध्यान में रखते हुए। पूरा करने के लिए उन्होंने इंग्लैण्ड में ग्रीक, लैटिन जैसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया, किंतु भारत आकर उन्होंने भारतीय दर्शन का इतना अध्ययन किया जितना अन्य किसी भारतीय ने नहीं किया। बड़ौदा नरेश के यहाँ सेवा करते समय ही उनकी शादी सन 1901 में मृणालिनी नामक कन्या से हुई किंतु सन 1918 में उनकी पत्नि का देहावसान हो गया। सन 1905 में बंगाल के विभाजन के समय उन्होंने बड़ौदा नरेश की सेवा को त्याग दिया और सक्रिय राजनीति में आ गये। परिणामस्वरूप सन 1908 ई० में उनको

एक वर्ष तक अलीपुर जेल में कैद करके रखा गया। उनको जेल में ही ____________ अपने जीवन को अध्यात्म और धर्म की ओर अग्रसर होने की ईश्वरीय प्रेरणा मिली। सन 1910 में श्री अरविंद पाण्डिचेरी गये और योग साधना में लीन हो गये और सन 1950 में उनकी मृत्यु हो गई।

श्री अरविंद घोष के जीवन दर्शन

श्री अरविंद घोष ने अपने जीवन को आध्यात्मिक और धार्मिक चिंतन से जोड़ा और योग साधना के द्वारा ईश्वर के दर्शन किये। उनके अनुसार आध्यात्मिकता ही मनुष्य की कुंजी है। मनुष्य के जीवन का चरम लक्ष्य आध्यात्मिकता का विकास करना होना चाहिए। अरविंद घोष वेदों में और योग शक्ति में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

श्री अरविंद के अनुसार जीवन विश्व शक्ति का एक स्वरूप है जो सदैव-सदैव क्रियाशील रहती है। श्री अरविंद गीता में विश्वास रखते हैं व गीता के कर्म सिद्धान्त में भी विश्वास करते हैं। उनके अनुसार मनुष्य जैसे कर्म करेगा, तदनुसार ही वह पुनर्जन्म प्राप्त करता है।

श्री अरविंद का शिक्षा दर्शन

श्री अरविन्द ने भारतीय शिक्षा चिंतन में महत्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने सर्वप्रथम घोषणा की कि मानव संसार के जीवन में भी दैवी शक्ति प्राप्त कर सकता है। उन्होंने 12 Feb. से 2 April 1910 तक साप्ताहिक पत्र 'कर्मयोगी' में प्रकाशित किये। इन लेखों को संकलित कर वर्तमान समय में कलकत्ता के 'आर्य पब्लिशिंग हाउस' ने राष्ट्रीय शिक्षा

की एक पद्धति के रूप में प्रकाशित किया है, जो संक्षिप्त में निम्नलिखित है :-

मस्तिष्क का स्वरूप

श्री अरविंद के अनुसार समस्त प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का श्रेय केवल मस्तिष्क को है। श्री अरविंद स्तरानुकूल मस्तिष्क को चार भागों में विभाजित करते हैं जो निम्नलिखित हैं :-

i) चित :- यह समस्त मानसिक क्रियाओं का आधार है जो व्यक्ति की स्मरण शक्ति को प्रभावित करता है।

ii) मानस :- यह मस्तिष्क का दूसरा भाग है सभी पांचों ज्ञानेन्द्रियाँ मानस से संबंधित होती हैं। मानस ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान को मानसिक प्रभावों में परिवर्तित करता है।

iii) बुद्धि :- यह मस्तिष्क का तीसरा रूप है, बुद्धि मानस स्तर पर प्राप्त ज्ञान का एकीकरण, वर्गीकरण, समन्वय, विश्लेषण आदि कार्य भी करती है।

iv) चेतना :- यह मस्तिष्क का सर्वोपरि एवं सर्वोच्च स्वरूप है चेतना ही मनन तथा चिंतन करने की शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति मनुष्यत्व से ऊपर उठकर ईश्वर के निकट जाता है।

अरविंद का शिक्षा दर्शन हमें सही दिशा का निर्देश करता है। "श्री अरविंद का शिक्षा दर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी, उपागम की दृष्टि से यथार्थवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकांक्षा की दृष्टि से मानवतावादी है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा में अपनाना चाहिए।"

श्री अरविंद घोष की रचनाएँ

i) Savitri (A legend and a Symbol)
ii) Essay on the Geeta
iii) The Mother
iv) The Secret of the veda's
v) The Future Poetry
vi) The Upanishads
vii) A System of national Education

शिक्षा का अर्थ

श्री अरविंद घोष के अनुसार सच्ची एवं वास्तविक शिक्षा वही है जो व्यक्ति तथा बालक की छिपी हुई शक्तियों के विकास में सहायक हो तथा व्यक्ति के जीवन, अन्तःकरण एवं आत्मा में समुचित संबंध स्थापित कर सके। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कुछ भाव और प्रवृतियाँ होती हैं जिन्हें हम शिक्षा के माध्यम इन प्रवृतियों का विकास कर आगे बढ़ायें। शिक्षा वही है जो व्यक्ति की इस आंतरिक आत्मा तथा ईश्वरीय चेतन शक्ति का विकास करे। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति ईश्वर की इस चेतन शक्ति को अपने अंदर बुला सकता है। हमें शिक्षा द्वारा मस्तिष्क का विकास करना चाहिए।

शिक्षा का कार्य

श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा का सर्वप्रथम कार्य मानसिक शक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है, जिसके द्वारा मन की एकाग्रता का विकास किया जा सकता है।

शिक्षा के उद्देश्य

श्री अरविंद घोष के अनुसार शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिए :—

i) बालक का उत्तम शारीरिक विकास करना।
ii) बालक का चारित्रिक विकास करना तथा बालक के अंत:करण का शुद्धीकरण करना।
iii) बालक की विभिन्न इन्द्रियों तथा ज्ञानेन्द्रियों का समुचित विकास करना।
iv) बालक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
v) बालक में नैतिक तथा धार्मिक तथा अध्यात्मिकता का विकास करना।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

श्री अरविन्द घोष शिक्षा में बालक के अध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक तथा मानसिक विकास को काफी महत्व देते है। इसके लिए वे निम्नांकित पाठ्यक्रम प्रस्तावित करते है :—

i) प्राथमिक शिक्षा :- प्राथमिक स्तर पर बालक को मातृभाषा, सामान्य विज्ञान, गणित, समाजिक अध्ययन, चित्रकला, अंग्रेजी तथा फ्रेंच भाषा के शिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

ii) माध्यमिक शिक्षा :- शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, भौतिशास्त्र, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान, समाजिक अध्ययन, स्वास्थ्य विज्ञान के शिक्षण को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए।

iii) विश्वविद्यालय शिक्षा / उच्च शिक्षा :- इस स्तर पर भारत तथा विश्व के अन्य प्रमुख दर्शनो के अध्ययन का कार्य कर देना चाहिए। इसके साथ ही उसे विश्व-एकीकरण, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, इतिहास, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं, अंग्रेजी साहित्य, सभ्यता का इतिहास व गणित की शिक्षा भी देनी चाहिए।

शिक्षक एवं शिष्य

श्री अरविन्द कहते है, "शिक्षक कोई निर्देशक या स्वामी नही है वह तो सहायक व पथ प्रदर्शक है, उसका कार्य सुझाव देना है न कि बालक के ऊपर ज्ञान के बोझ को लादना है।"

श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा में बालक को केंन्द्रीय स्थान प्राप्त होना चाहिए। शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालक की रुचि, क्षमता, प्रकृति, प्रवृति तथा स्वभाव के अनुसार शिक्षा प्रदान करे।